पश्चिमी घाट

//

पश्चिमी घाट
भारत के चार जैवविविधता हॉटस्पॉट में से एक; यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त (2012)
गुजरात
महाराष्ट्र
उत्तरी पश्चिमी घाट
मध्य पश्चिमी घाट
कर्नाटक
नीलगिरी
गोवा
दक्षिणी पश्चिमी घाट
तमिलनाडु
केरल
नाम
सह्याद्री- उत्तरी महाराष्ट्र; सह्य पर्वतम- केरल
पर्वत प्रकार के बारे में विविध दृष्टिकोण
दृष्टिकोण 1: अरब सागर में भूमि के एक हिस्से के नीचे की ओर मुड़ने के कारण बनने वाले भ्रंशोत्थ पर्वत
दृष्टिकोण 2: वास्तव में पर्वत नहीं बल्कि दक्कन के पठार के भ्रंशोत्थ कगार/किनारे
प्रमुख चट्टानें
बेसाल्ट, ग्रेनाइट नीस, खोंडालाइट, कायांतरित नीस, क्रिस्टलीय चूना पत्थर, लौह अयस्क
भौगोलिक विस्तार
सतपुड़ा (उत्तर में) से तमिलनाडु के अंत तक कन्याकुमारी (दक्षिण में)
पर्वत श्रृंखलाएँ
नीलगिरि पर्वतमाला, शेवारॉय और तिरुमाला श्रृंखला
सबसे ऊँची चोटी- अनामुडी (केरल)
नदियाँ (उद्गम)
पश्चिम की ओर बहने वाली: पेरियार, भरतपुझा, नेत्रवती, शरावती, मंडोवी
पूर्व की ओर बहने वाली: गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, तुंगा, भद्रा, भीमा, मालप्रभा, घाटप्रभा, हेमवती, काबिनी
स्थानिक प्रजातियाँ
नीलगिरी तहर (IUCN स्थिति - EN)
शेर पूंछ मकाक (IUCN स्थिति - EN)
महत्त्वपूर्ण संरक्षित क्षेत्र
बायोस्फीयर रिज़र्व- अगस्त्यमाला और नीलगिरि
राष्ट्रीय उद्यान- साइलेंट वैली, बांदीपुर, एराविकुलम, वायनाड-मुदुमलाई, नागरहोल
बाघ अभयारण्य- कलक्कड़-मुंडनथुराई, पेरियार
प्रमुख दर्रे
थाल घाट दर्रा (कसारा घाट)
भोर घाट दर्रा
पलक्कड़ दर्रा (पाल घाट)
अम्बा घाट दर्रा
नानेघाट दर्रा
अम्बोली घाट दर्रा
महत्त्व
जलविद्युत उत्पादन
भारतीय मानसून मौसम पैटर्न को प्रभावित करता है
कार्बन पृथक्करण (हर साल ~ 4 MTकार्बन को निष्प्रभावी बनाना)
जैवविविधता के 8 वैश्विक सबसे महत्त्वपूर्ण हॉटस्पॉट में से एक (प्रजातियों और स्थानिकता की समृद्धि के कारण)
लोहा, मैंगनीज और बॉक्साइट अयस्कों, इमारती लकड़ी, काली मिर्च, इलायची, ऑयल पाम और रबर से समृद्ध
सर्वाधिक आदिवासी आबादी (PVTGs सहित)
महत्त्वपूर्ण पर्यटन/तीर्थस्थल
प्रमुख खतरे
खनन, औद्योगीकरण
वनोपज का बड़े पैमाने पर दोहन
मानव-वन्यजीव संघर्ष, अतिक्रमण, अवैध शिकार
पशुओं की चराई, वनों की कटाई
बड़ी जलविद्युत परियोजनाएँ
जलवायु परिवर्तन
प्रमुखी समितियाँ
गाडगिल समिति (2011) (पश्चिमी घाट पारिस्थितिकी विशेषज्ञ समिति)
» सिफारिशें: श्रेणीबद्ध क्षेत्रों में सीमित विकास के साथ समूचे पश्चिमी घाट को पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र (ESA) के रूप में घोषित किया जाना चाहिये।
कस्तूरीरंगन समिति (2013)
» सिफारिश: समूचे क्षेत्र के बजाय, पश्चिमी घाट के कुल क्षेत्रफल का केवल 37% ESA के तहत लाया जाए + ESA में खनन, उत्खनन और रेत खनन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए।
Drishti IAS

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/western-ghat-17